जवाहरलाल नेहरू

जीवन, उद्देश्य एवं उपादेयता

सम्पादक :
डा. के. एन. व्यास

रीड्स पब्लिकेशन्स

Scanned by CamScanner

16

भारतीय समाज व संस्कृति एवं नेहरू

डॉ. सुनिता बोहरा*

भारतीय समाज एक ऐसी संस्कृति का प्रतीक है जो एक रंग की साड़ी न होकर बहुरंगी चुनरियाँ है। परन्तु ऊपरी तौर पर देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि उसमें विविधता है, लेकिन गहराई पर जाने से पता चलता है कि इसमें एकता विद्यमान है।

भारतीय समाज पर विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किये हैं परन्तु पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय समाज को एक विशिष्ट दृष्टि से देखा है। नेहरू दार्शनिक तो थे ही साथ में अच्छे लेखक, महान् राजनीतिज्ञ और उससे कई अधिक वे राष्ट्रप्रिय भी थे। उनके भाषण व उनकी लेखनी इसी बात का प्रमाण है। नेहरू प्राचीन भारतीय संस्कृति में तो रूचि रखते ही थे आधुनिक भारत में भी उनका लगाव था। वे साम्राज्यवाद के तो दुश्मन थे, परन्तु विज्ञान, तकनीकी और प्रजातंत्र उनका अटूट विश्वास था। नेहरू आधुनिकता और परम्परा दोनों के बीच तालमेल व समन्वय के प्रबल पक्षधर थे।

नेहरू ने स्वयं को राष्ट्रीय जीवन में इतना आत्मसात कर लिया था कि उनके बिना हमारे स्वतंत्र भारत की कल्पना भी निरर्थक थी। स्वतंत्र व जनतंत्र के पुजारी, शांति के अग्रदूत तथा एक कर्मठ

* व्याख्याता, समाजशास्त्र, महेश महिला महाविद्यालय, जोधपुर

Scanned by CamScanner

जननायक के रूप में भारत की आगे आने वाली पीढ़ियाँ उनसे निरन्तर प्रेरणा लेती रहेगी। उनके जीवन व कार्यों का गहरा प्रभाव हमारे चिन्तन, हमारे सामाजिक संगठन व हमारे बौद्धिक विकास पर पड़ा है। उन्होंने जिस तरह से इस शोषित व पीड़ित देश का नव निर्माण किया उसका उदाहरण किसी देश के इतिहास में मिलना कठिन है। नेहरू ने भारतीय समाज को एक विस्तृत दृष्टिकोण से देखा जिसका उल्लेख विश्व इतिहास की झलक आत्मकथा ''भारत एक खोज'' में किया।

भारतीय समाज के विकास पर नेहरू ने अपने विचार 1946 में हिन्दुस्तान टाइम्स में इस प्रकार रखे कि कोई भी व्यक्ति अगर भूखा है तो उसे भोजन मिले, नग्न है तो उसे कपड़े मिले। सभी को अपने सामर्थ्य अनुसार उन्नति के अवसर मिलने चाहिए। नेहरू के अनुसार व्यक्ति की प्रगति का आधार उसके जन्म, धर्म, रीति–रिवाज से नहीं होना चाहिए। बल्कि समाज का निर्माण प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता व धर्म निरपेक्ष शिक्षा के आधार पर करना चाहिए। नेहरू के अनुसार सामाजिक आर्थिक प्रगति व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताओं पर ही न हो बल्कि उससे आगे बढ़ते हुए हर तरफ से उसका विकास हो, ऐसी होनी चाहिए।

नेहरू के विचार से आधुनिक भारत का समाज न पूरी तरह से समाजवादी हो न ही पूरी तरह से औद्योगिकृत हो। बल्कि दोनों विचारों के मंथन के निचोड़ के आधार पर आधुनिक आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए। नेहरू का यह स्पष्ट विचार था कि एक ऐसा मजबूत समाज बनाया जाए जिसके अन्तर्गत ऐसी व्यवस्था हो जिससे धनाढ्य वर्ग और अधिक धनाढ्य न बने, गरीब तबका और अधिक गरीब न बने। इसी के आधार पर योजना आयोग का 1950 में गठन किया गया और प्रथम पंचवर्षीय योजना तक इस तरह से कार्य किए गए जिससे कि समाज हर दृष्टि से आत्म निर्भर बन पाए।

नेहरू की विचारधारा में सामाजिक परिवर्तन में इस तरह का एक सन्तुलन हो जिसके अन्तर्गत इच्छाएँ, आवश्यकताएँ, महत्वाकाक्षाएँ और प्रत्येक व्यक्ति की राजनीति व अधिकारों की स्वतंत्रता, नौकरी

Scanned by CamScanner

पेशों की सुरक्षा, धर्म की स्वतंत्रता व समाज के एक वर्ग से दूसरे वर्ग के बीच किसी प्रकार का भेद न हो इस तरह की विचारधारा नेहरू को अपने पिता मोतीलाल नेहरू से प्राप्त हुई। उन्होंने 1928 में यह उद्घोषित किया कि इस तरह के नियम बनाए जाए कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति के जो मौलिक अधिकार हैं, वे किसी सूरत में उनसे छिने नहीं जाए, इसमें और सुधार करते हुए 1931 में नेहरू ने मौलिक अधिकारों का विस्तृत वर्णन करते हुए कहा कि इस तरह के कानून बनाए जाए जिससे समाज के गरीब तबकों को, मजदूरों को, वृद्धजनों को, बीमारजनों को, बेरोजगारों को सभी को न्याय मिल सके। नेहरू के अनुसार राजनीतिक स्वतंत्रता आर्थिक स्वतंत्रता के बगैर अर्थहीन हैं। आर्थिक स्वतंत्रता ही वास्तव में समाजवाद है।

नेहरू के विचार से प्रजातांत्रिक समाज वो है जिसके अन्तर्गत धनीवर्ग व गरीब वर्ग में कोई अन्तर नहीं हो।

नेहरू ने विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों की प्रगति पर जोर देते हुए भारतीय समाज की विविधता उनके विचारों से प्रतिबिम्ब होती थी, वे भारतीय संस्कृति को प्रेम करते थे तथा वे इस बात को स्वीकार करते थे कि भारत की महान् सभ्यता और संस्कृति वंशानुक्रम पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित हो। उन्हीं के विचारों का प्रभाव उनकी पुत्री इंदिरा गांधी पर पड़ा। "भारत एक खोज" नामक पुस्तक उनके विचारों का प्रतीक है। उससे उन्होंने इस बात को महसूस किया कि पूरे पृथ्वी पर महानतम संस्कृति भारतीय संस्कृति ही है। इस पुस्तक में इन्होंने परम्परा पर तो नजर रखी ही पर साथ में इस बात के पक्के समर्थक रहे कि वैज्ञानिक मूल्यों का प्रसार हो। वह उनका स्वप्न था कि आजाद भारत बिल्कुल अलग छवि लेकर बने जो प्राचीन भारतीय समाज से अलग हो। इसी से पं. नेहरू विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों की प्रगति पर बल दिया और कहा कि इसी से लोगों का कल्याण हो सकता है और यह कहा करते थे कि आजाद भारत में विज्ञान और तकनीकी प्रगति करें तब महात्मा गांधी के विचारों के साथ उनका मतभेद होता था क्योंकि गांधीजी हिन्द स्वराज्य की अवधारणा पर बल देते थे और वे उसी पर आधारित भारतीय समाज की बात किया करते

Scanned by CamScanner

थे। जबकि नेहरू के विचार राष्ट्रीय निर्माण में विज्ञान और तकनीक को महत्व देते थे। उनका यह दृष्टिकोण था कि भारत इतने सालों से अन्धकार में रह रहा था वहां पर आधुनिक तकनीकी साधन ही राष्ट्र में प्रकाश फैला सकते हैं।

नेहरू सामन्ती प्रथा के अन्त पर जोर देते हुए भारतीय समाज की छवि दो रूपों में देखते थे, एक समकालीन भारतीय समाज का स्थानान्तरण व्यवस्थित प्रोग्रामों के द्वारा और दूसरा स्वतंत्र भारत में सामन्त राज्यों का उन्मूलन। वे ये कहते थे कि स्वाधीनता और सामन्त साथ–साथ नहीं चल सकते। इसलिए हमें भारतीय समाज का विकास करना है तो सामन्त प्रथा को समाप्त करना होगा। पं. नेहरू ने छोटे – छोटे राज्यों को एकीकृत कर एक महत्वपूर्ण कदम उठाया।

पं. नेहरू के जाति सम्बन्धी विचार भी महत्वपूर्ण थे। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज में जाति प्रथा और समानता का एक विशिष्ट स्वरूप है जो संरचनात्मक वास्तविकता के मार्ग में प्रगति को रोकती हैं। उन्होंने कहा कि यूरोपीयन देशों में जहाँ धर्म का महत्व था वहां वैज्ञानिक विश्वासों ने धर्म का स्थान लिया। इसलिए अगर राष्ट्र का विकास करना है तो जाति जैसी प्रथा को बदलना होगा। नेहरू अपने उद्घोषों में जातिवाद जैसी बुराई को स्वाधीन भारत के लिए एक कलंक माना और कहा कि इसी से व्यक्ति विभाजित होते हैं। जाति प्रथा से जातिवाद तो पनपा ही है, और साथ में, ज्योतिषी, गौरक्षा, धार्मिक अन्धविश्वास भी पनपे है जो भारत में विकसित हुए और लोगों का दुश्मन बनने लगे।

धर्म निरपेक्षता की बात नेहरू की दृष्टि में थी। जहां धर्म के लोगों को समान मानकर पूर्ण अवसर दिया जाए। धर्म के नाम पर हिन्दू–मुसलमानों के बीच जो साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न हो रहे थे उससे नेहरू अधिक चिन्तित थे। उनकी यह धारणा थी कि धार्मिक अल्पसंख्यक सूमह का विशेष ध्यान देकर उनकी सुरक्षा भारतीय समाज में होनी चाहिए।

Scanned by CamScanner

नेहरू ने स्वीकार किया कि भारत में नस्ली और सांस्कृतिक विभिन्नताएं है किन्तु इन भिन्न्ताओं का धार्मिक विभाजन से कोई सम्बन्ध नहीं हो। नेहरू हिन्दू–मुस्लिम एकता बनाये रखना चाहते थे ताकि देश में भाईचारे के भाव विकसित हो सके। नेहरू मानते थे कि हिन्दू सम्प्रदायवादियों ने मुसलमानों के सम्प्रदायवाद को बढ़ाया और हिन्दुओं के प्रति उन्हें और भी अधिक अविश्वासी बना दिया। नेहरू ने बार–बार कहा कि सम्प्रदायवाद राजनीतिक और सामजिक प्रतिक्रियावादियों के हाथ का हथियार है जिसके जरिये वे साम्राज्यवाद विरोधी संघ में रूकावट डालते हैं और उच्चतर वर्गों की सुख–सुविधाओं को सुरक्षित बनाये रखते हैं। नेहरू का विश्वास था कि इन लोगों को पराजित करने के लिए हिन्दू मुस्लिम एकता अनिवार्य है और इस मामले में हिन्दुओं के कन्धों पर विशेष जिम्मेदारी थी क्योंकि वे बहुसंख्यक समुदाय थे। नेहरू का मत था कि हिन्दूओं, मुसलमानों, ईसाईयों, सिक्खों तथा भारत के अन्य ऐसे ही समूहों के सैद्धान्तिक ढांचे में जो विविधता है वह खत्म कर दी जायेगी इसका अर्थ तो यह था कि एक समान राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास होगा।

अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदायों के साथ–साथ नेहरू ने आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए लोगों की सुरक्षा पर भी विचार रखे जिनमें हरिजन, आदिवासी प्रमुख थे। गांधी भी इसके समर्थक थे। इसलिए नेहरू ने यह कहा कि पूरे भारतवर्ष में हरिजनों को विशिष्ट उपचार देना होगा क्योंकि ऐसा नहीं करना भारतीय समाज के लिए एक काला धब्बा होगा। जनजातीय भारत पर भी नेहरू मानवीय दृष्टि रखते थे वे इस बात के पक्षधर थे कि जनजातियों को जो भारतीय समाज और संस्कृति से अलग–थलग है उन्हें राष्ट्रीय की मुख्य धारा में मिलाने वाली आधुनिक सभ्यता का सही फल प्राप्त हो सकता है।

नेहरू प्रशसनिक सिद्धान्तो में अटूट विश्वास रखते थे वे समाज सुधारक तो थे ही लेकिन संस्कृति विरासत को सुरक्षित रखना चाहते थे और आधुनिक विकास करने के लिए पंचशील सिद्धान्तों की उत्पति की।

Scanned by CamScanner

- लोग अपने ही लाईन पर विकास करे उन पर जबरदस्ती किसी चीज को थोपे नहीं।
- जनजातियां, जो भूमि और जंगल पर अधिकार रखती थी उनका सम्मान करना।
- राष्ट्र के विकास के लिए टीम का निर्माण करके उन्हें प्रशिक्षित करना।
- राष्ट्र के विकास के लिए अलग–अलग क्षेत्र में नई–नई योजनाओं का विकास करना।
- राष्ट्र के विकास के सांख्यिकी गणना न करके, पैसा खर्च करने की गणना नहीं करके लोगों में गुणों का विकास करने पर जोर देना।

उपरोक्त पांच सिद्धान्तों को समाजशास्त्रियों और मानवशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया कहा है। नेहरू ने समाज की व्यवस्था पर एक प्रश्न उठाया कि भारत में किस प्रकार की समाजिक व्यवस्था होनी चाहिए? गांधी का स्वप्न हिन्द स्वराज्य था जिसमें समाज आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित समाज हो। उसे राम राज्य कहा है जिसकी आलोचना नेहरू ने की जिसकी चर्चा महात्मागांधी ने भी अपने लेख में की है कि मेरा स्वप्न नेहरू के स्वप्न से अलग है। नेहरू ने रामराज्य को पूरा न भूल जाने वाला भूतकाल कहा है क्योंकि रामराज्य भारतीय समाज की मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर सकता इसलिए भविष्य संरचना पर उन्होंने अपने विचार दिये।

Scanned by CamScanner